आरएनआई नं. : RAJHIN/2014/59353
डाक पंजी सं. : RJ/UD/29-154/2021-2023

दैनिक समाचार–पत्र

प्रेषण :- कार्यालय चेतक सर्कल पोस्ट ऑफिस ,उदयपुर
प्रेषण दिनांक: -प्रतिदिन

मन के जीते जीत सदा

• वर्ष - 9 • अंक-2439 • उदयपुर, शनिवार 28 अगस्त, 2021 • प्रेषण दिनांक : प्रतिदिन • कुल पृष्ठ : 4 • मूल्य : 1 रुपया

आपका अपना नारायण सेवा संस्थान, उदयपुर

मालपुरा (टोंक) में कृत्रिम अंग वितरण शिविर

नारायण सेवा संस्थान द्वारा दिव्यांगों की सेवार्थ देश–विदेश में निःशुल्क शिविर लगाकर उन्हें राहत पहुंचाने का क्रम जारी है। इसी क्रम में 19 अगस्त 2021 को महेश भवन मालपुरा, जिला– टोंक, राजस्थान में विशाल निःशुल्क कृत्रिम अंग वितरण शिविर आयोजित किया गया। श्री बारांदर रामचरित मानस मण्डल मालपुरा द्वारा आयोजित इस शिविर में22 दिव्यांगों का ऑपरेशन में चयन, 24 दिव्यांगों को कृत्रिम अंग लगाये गये व 35 को कैलीपर्स प्रदान किये गये।

उक्त शिविर में मुख्य अतिथि कन्हैयालाल जी चौधरी (विद्यायक महोदय, टोडाराय सिंह, मालपुरा), अध्यक्ष श्रीमति नरेश सरोज जी बंसल(जिला प्रमुख महोदया, टोंक), विशिष्ट अतिथि श्री सकराम जी चौपड़ा (प्रधान महोदय), श्री अरूण जी तोमर (निदेशक अविकानगर), श्री श्यामसेवक विकास जी जैन (समाजसेवी) एवं श्री सुरेन्द्र मोहन जी जैन (शाखा संयोजक नारायण सेवा संस्थान), श्री राजकुमार जी जैन (एडवोकेट), सुश्री ऐश्वर्या जी जैन एवं सुश्री निकी जी जैन पधारे।

टेक्नीशियन श्री नाथू सिंह जी एवं श्री उत्तम चंद जी ने श्री हरिप्रसाद जी (शिविर प्रभारी), श्री भरत जी, एवं मुकेश जी त्रिपाठी (सहायक) आदि की टीम के साथ सेवाएं प्रदान की।

पोपलटी उदयपुर में पोषाहार शिविर सम्पन्न

नारायण सेवा संस्थान ने 'नारायण गरीब परिवार राशन वितरण योजना' के अन्तर्गत गुरुवार को ग्राम पंचायत पोपलटी में शिविर आयोजित किया। संस्थापक चेयरमैन कैलाश 'मानव' ने संस्थान की जुलाई माह में हुई सेवाओं पर प्रकाश डालते हुए कहा कि उदयपुर जिले में 1850 किट बांटे गए तथा 5000 से ज्यादा जरूरतमंदों को मदद पहुंचाई गई।

संस्थान अध्यक्ष प्रशान्त जी अग्रवाल ने बताया कि शिविर में संस्थान निदेशक वंदना जी अग्रवाल और पलक जी अग्रवाल की 10 सदस्यीय टीम ने पोपलटी और आसपास के बेरोजगार आदिवासियों को 100 मासिक राशन किट, 150 साड़ियां और 200 बच्चों को बिस्किट के पैकेट वितरित किए।

संस्थान द्वारा राशन सेवा जारी

नारायण सेवा संस्थान, इसके आश्रम व शाखाओं द्वारा कोरोना के प्रकोप के समय से ही जरूरतमंद परिवारों को राशन पहुंचाने का सेवा प्रारंभ की थी। समय की आवश्यकता को देखते हुए यह सेवा अनवरत हो रही है।

17 अगस्त 2021 को एक राशन वितरण शिविर चेलक, जिला– जैसलमेर (राज) में संपन्न हुआ। इसमें 56 परिवारों को राशन प्रदान किया गया। शिविर में मुख्य अतिथि श्रीमान खीवराज सिंह जी (पूर्व सरपंच महोदय), अध्यक्ष श्री मान जालम सिंह जी, विशिष्ट अतिथि श्री मान रफीक जी खान एवं श्रीमान् इमाम जी खान (समाज सेवी) आदि पधारे। शिविर में प्रभारी श्री मुकेश जी शर्मा ने व्यवथाएं देखीं। प्रत्येक परिवार को राशन किट में 15 किलो आटा, 2 किलो दाल, 5 किलो चावल, 2 किलो तेल, 4 किलो चीनी, 1 किलो नमक एवं मसाले प्रदान किए गए।

संस्थान द्वारा रतलाम में राशन सेवा

नर को नारायण का स्वरूप मानते हुए असहाय दिव्यांग, मूक– बधिर एवं कोरोना महामारी के चलते बेरोजगार हुए व्यक्तियों को नारायण सेवा द्वारा रतलाम में 40 निर्धन परिवारों को निःशुल्क राशन किट वितरित किए गये। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि श्री मंगल जी लोढ़ा (पार्षद), अध्यक्ष श्रीमान विकास जी, विशिष्ट अतिथि श्रीमान् ब्रजेश जी कुशवाह, श्री मंगलसिह जी श्री मान विरेन्द्र जी शक्तावत, श्री मान प. हितेश जी, श्री भरत जी पोरवाल, श्री नरेन्द्र सिंह जी पधारे।

शिविर प्रभारी श्री मुकेश जी शर्मा ने बताया कि ऐसे जरूरतमंदों के लिए नारायण गरीब परिवार राशन योजना के माध्यम से 50 हजार परिवारों तक राशन पहुंचाने का लक्ष्य निर्धारित किया है इसी क्रम में रतलाम में राशन वितरण शिविर आयोजित किया गया। प्रत्येक किट में 15 किलो आटा, 2 किलो दाल, 5 किलों चावल, 2 किलो तेल, 4 किलो चीनी, 1 किलो नमक एवं मसाले प्रदान किए गए।

दिव्यांग, अनाथ, असहाय एवं वंचितजन की सेवा में सतत सक्रिय संस्थान के विभिन्न सेवा प्रकल्पों में करें सहयोग

कृपया अपने परिजनों या स्वयं के जन्मदिन, शादी की वर्षगांठ पुण्यतिथि को बनायें यादगार..

जन्मजात पोलियो ग्रस्त दिव्यांगों के ऑपरेशनार्थ सहयोग राशि

ऑपरेशन संख्या	सहयोग राशि	ऑपरेशन संख्या	सहयोग राशि
501 ऑपरेशन के लिए	17,00,000	40 ऑपरेशन के लिए	1,51,000
401 ऑपरेशन के लिए	14,01,000	13 ऑपरेशन के लिए	52,500
301 ऑपरेशन के लिए	10,51,000	5 ऑपरेशन के लिए	21,000
201 ऑपरेशन के लिए	07,11,000	3 ऑपरेशन के लिए	13,000
101 ऑपरेशन के लिए	03,61,000	1 ऑपरेशन के लिए	5000

निर्धन एवं दिव्यांगों को खिलाएं निवाला

आजीवन भोजन/नाश्ता सहयोग मिति

(वर्ष में एक दिवस 50 दिव्यांग, निर्धन एवं अनाथ बच्चों के लिए भोजन/नाश्ता सहयोग हेतु मदद करें)

नाश्ता एवं दोनों समय भोजन सहयोग राशि	37000/-
दोनों समय के भोजन की सहयोग राशि	30000/-
एक समय के भोजन की सहयोग राशि	15000/-
नाश्ता सहयोग राशि	7000/-

दुर्घटनाग्रस्त एवं जन्मजात दिव्यांगों को दें कृत्रिम हाथ-पैर और सहायक उपकरणों का उपहार

वस्तु	सहयोग राशि (एक नग)	सहयोग राशि (तीन नग)	सहयोग राशि (पाँच नग)	सहयोग राशि (ग्यारह नग)
तिपहिया साईकिल	5000	15,000	25,000	55,000
व्हील चेयर	4000	12,000	20,000	44,000
केलीपर	2000	6,000	10,000	22,000
वैशाखी	500	1,500	2,500	5,500
कृत्रिम हाथ/पैर	5100	15,300	25,500	56,100

गरीब दिव्यांगों को बनाएं आत्मनिर्भर

मोबाइल /कम्प्यूटर/सिलाई/मेहन्दी प्रशिक्षण सौजन्य राशि

1 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि- 7,500	3 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि -22,500
5 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि- 37,500	10 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि -75,000
20 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि- 1,50,000	30 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि -2,25,000

अधिक जानकारी के लिए कॉल करें

मो नं. : +91-294-6622222 वाट्सअप : +91-7023509999

आपके अपने संस्थान का पता

नारायण सेवा संस्थान - 'सेवाधाम', सेवानगर, हिरण मगरी, सेक्टर-4, उदयपुर-313002 (राजस्थान) भारत

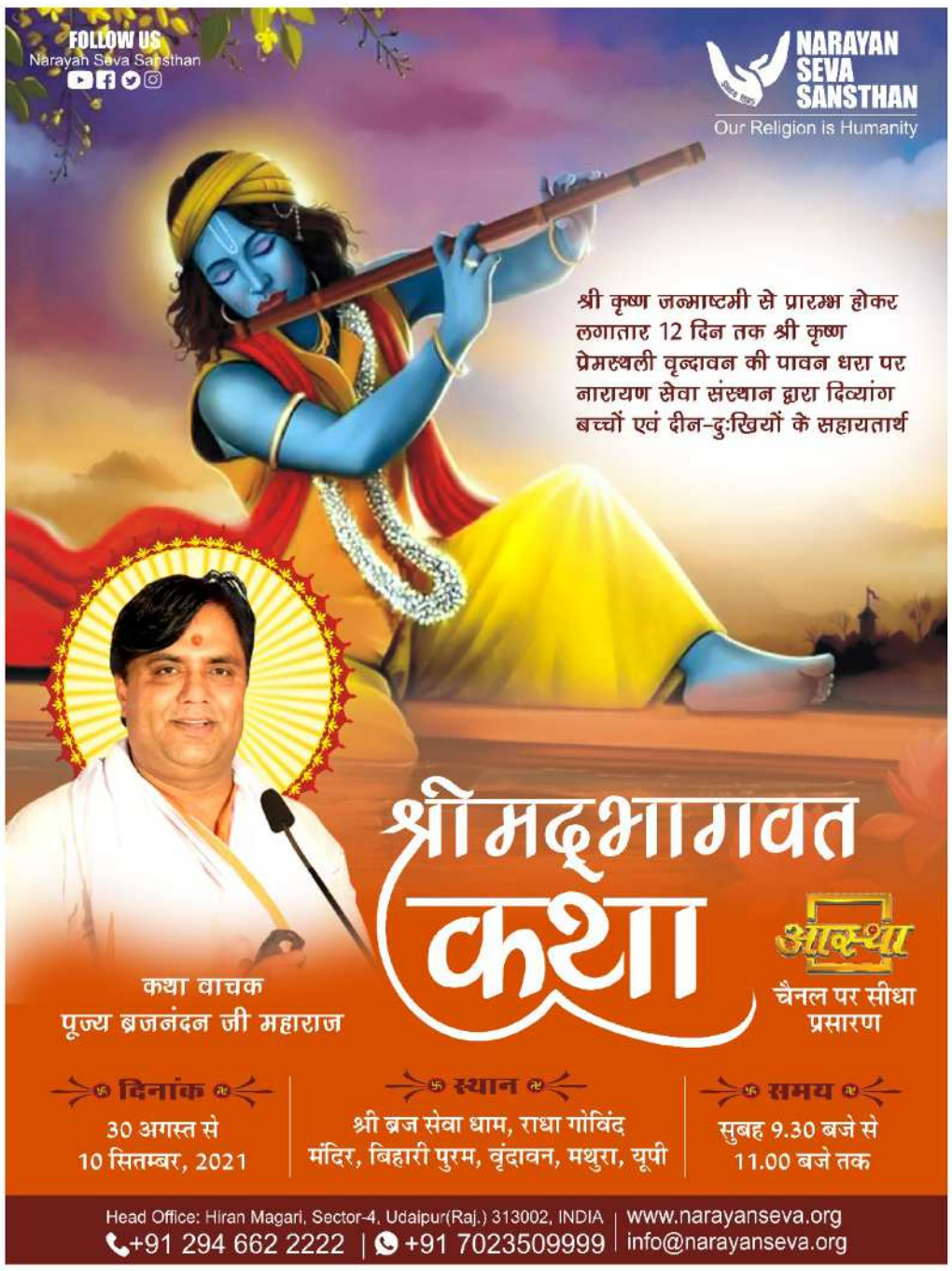

संस्थान के सहयोग से किशन को मिला रोजगार

मैं किशन लाल भील, उम्र 36 अचलाना, उदयपुर का रहने वाला हूँ तथा आठवीं कक्षा उत्तीर्ण हूँ। मैंने सन् 1995 से बस कण्डक्टरी का कार्य करना चालू किया था। बस का रूट भीण्डर से बडी सादडी था। 22 मार्च 2000 को बस का एक्सीडेंट हो गया। उस हादसे में कानोड निवासी एक व्यक्ति की मौत हो गई एवं 22 लोग घायल हो गये। उस हादसे में मेरे दोनों पैर कट गये । वहां के स्थानीय लोगों ने हमें महाराणा भूपाल चिकित्सालय उदयपुर में भर्ती करवाया। मेरे 4 ऑपरेशन हुए परन्तु सभी असफल रहे। फिर जिन्दगी बैसाखियों के सहारे चलने लगी। मेरे पैरों की स्थिति के कारण, हादसे के चार साल बाद नारायण सेवा संस्थान ने ऑटिफिशयल पैर लगाये गये, मैं बिना बैसाखियों के चलने लगा। परन्तु मेरे पास कोई रोजगार नहीं था। जिसमें मैं अपने परिवारों का गुजारा कर सकूं मैंने संस्थान में आकर अपनी आपबीती सुनाई।

संस्थान ने मेरे दुःख सुनकर मुझे रोजगार से जोड़ने के लिए सब्जी का ठेला एवं आश्वयक समाग्री प्रदान की ताकि मैं अपने परिवार को भरण – पोषण कर सकूं। मैं संस्थान का बहुत–बहुत आभार व्यक्त करता हूँ।

संस्थान की सेवा के आयाम

प्रकाश के सपनों को मिले पंख

नाम प्रकाश था किन्तु जीवन उसे अंधकार में दिख रहा था। वह खूब पढ़कर परिवार और गांव के लिए कुछ करना चाहता था। लेकिन आर्थिक समस्या उसके इस सपने को पूरा करने में बाधक थी। ऐसे में नारायण सेवा संस्थान उसका मददगार बना और आगे की पढ़ाई का रास्ता खोलकर उसके सपनों को पंख लगा दिए।

राजस्थान के उदयपुर जिले के आदिवासी क्षेत्र कोटड़ा निवासी प्रकाश बम्बुरिया ने बचपन में ही माता–पिता को खो दिया था। दादा–दादी उसकी परवरिश तो करते रहे लेकिन गरीबी और वृद्धावस्था के कारण वे न तो अपनी और न ही बच्चे की देखभाल ठीक से कर पा रहे थे। इसी दौरान संस्थान का कोटड़ा में सेवा शिविर था। जिसमें ट्रस्ट के शिविरकर्मियों द्वारा बच्चे की हालत देखकर उसे संस्थान में लाने का निर्णय लिया गया। उसे नारायण चिल्ड्रन एकेडमी में भर्ती किया गया। पांच वर्ष की उम्र से प्रकाश ने संस्थान में रहते हुए अपनी ग्यारहवीं तक की पढ़ाई पूरी की।

इस होनहार ने 10वीं बोर्ड की परीक्षा 73 प्रतिशत अंक से उत्तीर्ण की है। प्रकाश की काबिलियत को देखते हुए संस्थान अध्यक्ष प्रशांत जी अग्रवाल ने बारहवीं में अच्छे अंक हासिल करने के उद्देश्य से उसे एक जाने–माने कोचिंग सेंटर से कोचिंग का निर्णय लिया। जिसके लिए 6500 रुपये शिक्षण शुल्क के रूप में प्रदान किए गए ताकि वह अपनी मेहनत और योग्यता के बल पर बड़ी उपलब्धियां हासिल कर जीवन को अपने नाम के अनुरूप सार्थक कर सके।

सम्पादकीय

किसी भी देश की वास्तविक सम्पदा वहाँ के जल संसाधन, वन, पर्वत, मैदान तथा प्राणी होते हैं। किन्तु भारत की विशेषता है कि हम इन्हें केवल संसाधन नहीं मानते वरन् इनका स्थान अत्यन्त उच्च है। जैसे नदियों को ही लें, अपने देश में गंगा, यमुना, कृष्णा, नर्मदा, कावेरी, क्षिप्रा, गोदावरी आदि समस्त नदियों को माँ का दर्जा दिया गया है। इन नदियों की गोद में स्नान करते समय हरेक व्यक्ति सोचता है कि माँ की गोद में चले आये हैं। इनके जल को माँ का चरणामृत समझ कर ग्रहण करने का भाव होता है। इनकी पूजा देवी समान माँ की पूजा ही होती है।

ये जल की धारायें भी प्राणिमात्र की परिपालना में कितनी तत्पर हैं यह सर्वविदित है। जितनी भी संस्कृति व सभ्यता के केन्द्र विकसित हुए हैं वे नदियों के तट पर ही हुए हैं। अन्न, जल ये प्राणियों के लिये संजीवनी के समान हैं ये इन नदियों से ही प्राप्त होती है। इन नदियों ने जीवंत रूप में हमें पाला है तो लुप्त अवस्था में ऐतिहासिक व पुरातात्विक गौरव प्रदान किया है। वास्तव में ये पवित्र नदियां देश की वे नसें हैं जिन पर जीवन आधारित है।

कुछ काव्यमय

मानवता का पंथ
सबके लिए उपलब्ध है
देता है सबको आवाज।
व्यक्ति जगा, परिवार जगा
तो समझो जग गया समाज।
वह दिन दूर नहीं जब फिर
एक अच्छा सा संसार होगा।
यह सपना साकार होगा।।

- वरदीचन्द राव

अपनों से अपनी बात

दान फिर लौट आता है

बहूत समय पहले की बात है। रमनपुर राज्य में सुबह– सुबह एक भिखारी भीख मांगने निकला। कई बार घूमने के बाद घर से उसे कुछ अनाज मिला। वह राजपथ की तरफ जाने लगा तो उसने देखा कि सामने से राजा की सवारी आ रही थी। वह सड़क के एक ओर खड़ा हो गया और सवारी की गुजर जाने की प्रतीक्षा करने लगा।

लेकिन राजा की सवारी उसके सामने ही रूक गई। राजा एक पात्र उसके सामने करते हुए बोले, 'मुझे कुछ भीख दे दो। देखो, मना मत करना। राज्य पर संकट आने वाला है। मुझे किसी ज्योतिषी ने बताया है कि रास्ते में जो भी पहला भिखारी

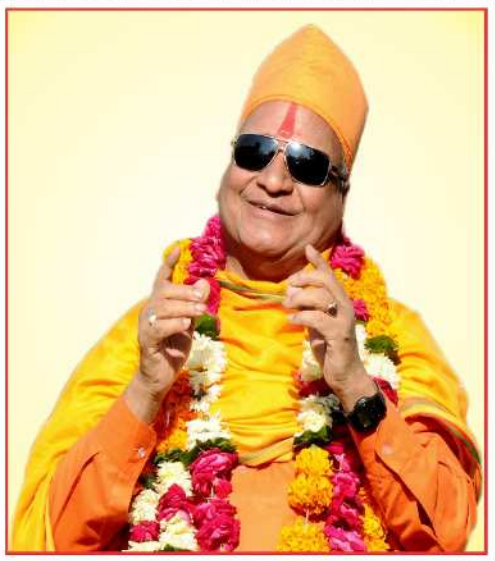

मिले उससे भीख मांग लेना। इससे संकट टल जाएगा। भिखारी आश्चर्यचकित हो गया। उसने अपने झोले में हाथ डाला और एक मुट्ठी अनाज भर लिया। लेकिन उसके मन में लालच आ गया की इतना दे देगा तो झोले में क्या बचेगा।

उसने मुट्ठी ढीली की और कुछ अनाज कम करके राजा के पात्र में डाल दिया। घर जाकर पत्नी से बोला, 'आज तो अनर्थ हो गया। राजा को भीख देनी पड़ी। नहीं देता तो क्या करता? पत्नी ने झोला उल्टा तो कुछ दाने सोने के निकले ।

यह देखकर भिखारी बोला, 'काश ! सारा अनाज दे देता तो झोले में उतने सोने के दाने भरे होते जीवन भर की गरीबी मिट जाती।' उसकी समझ में आ गया था, कि दान देने से संपन्नता बढ़ती है घटती नहीं। बसंत के आगमन की खुशी में पेड़– लताएं अपने तमाम पत्ते न्यौछावर कर देते हैं, लेकिन कुछ ही दिनों बाद ये पेड़ पुनः नये पत्तों से भरपूर हो उठते हैं। अभिप्राय यह है कि दिया हुआ दान पुनः किसी न किसी माध्यम से हमें मिलता है।

– कैलाश 'मानव'

स्वर्ग और नरक

एक बार एक चीनी दार्शनिक के पास यूनान का सेनापति पहुँचा। उस सेनापति ने उस दार्शनिक से हाथ जोड़कर पूछा–स्वर्ग और नरक क्या है? मुझे स्वर्ग और नरक का ज्ञान दीजिए।

दार्शनिक ने कहा–मैं स्वर्ग और नरक का ज्ञान तो बाद में दूँगा, पहले यह बताओ कि तुम हो कौन?

इस पर सेनापति ने उत्तर दिया–मैं यूनान का सेनापति हूँ।

उत्तर सुनकर दार्शनिक ने व्यंग्यपूर्ण तरीके से कहा–शक्लो–सूरत से तो तुम कोई सेनापति नहीं लगते हो। तुम तो कोई भिखारी जान पड़ते हो।

यह सुनकर सेनापति क्रोधित हो गया। उसने दार्शनिक से कहा–आपने शायद मुझे ठीक से पहचाना नहीं है। मैं शक्ल से कहाँ भिखारी लगता हूँ? क्या मेरे हाथ में भीख माँगने के लिए कोई कटोरा है? मुझे आप भिखारी कैसे कह रहे हैं?

दार्शनिक ने कहा–तुम तो भिखारी ही लगते हो और तुम्हारी कमर पर यह क्या लगा हुआ है?

सेनापति ने उत्तर दिया–यह मेरी तलवार है। दार्शनिक ने कहा–एक भिखारी होकर तलवार लेकर घूमते हो!

इस पर सेनापति ने क्रोधित होते हुए कहा–मैं जो जानने आया हूँ, उसका उत्तर दे दो अन्यथा मेरा इस तरह अपमान मत करो। मेरी तलवार के बारे में अपशब्द कह कर मुझे क्रोधित मत करो। "बताओ तो कैसी है तुम्हारी तलवार? अरे! यह तो मोटी है" दार्शनिक ने कहा। अत्यन्त क्रोधित होकर सेनापति ने दार्शनिक से कहा–अगर तुम्हारी जगह कोई और होता तो उसका शीश एक वार में काटकर तलवार की धार दिखा देता। यह तो तुम हो इसलिये तुम्हें छोड़ रहा हूँ। सेनापति ने अपनी तलवार की धार दिखाने के लिए पास ही के एक पेड़ की डाली को एक ही प्रहार में काट दिया और दार्शनिक से कहा–यह देखो, मेरी तलवार की धार।

दार्शनिक ने शांत स्वर में कहा– तुम क्या प्रश्न पूछने आये थे, स्वर्ग और नरक क्या है? मैंने अभी–अभी तुम्हारे प्रश्न का उत्तर दे दिया है।

सेनापति ने अचंभित होते हुए कहा–कैसा उत्तर? दार्शनिक ने समझाते हुए कहा–मेरे दो शब्द अपमान के कहने पर तुम अत्यन्त क्रोधित हो गए एवं क्रोध की अग्नि में जलने लगे, यही तो नरक है। दार्शनिक का उत्तर सुनकर सेनापति ने तलवार फेंक दी और दार्शनिक के पैरों में गिरकर अपने द्वारा किए कृत्य के लिए क्षमायाचना करने लगा कि मुझे क्षमा कर दीजिए। मैंने क्रोध के वशीभूत होकर आपको अपशब्द कहे तथा आपका अपमान किया।

इस पर दार्शनिक ने सेनापति को उठाते हुए कहा–यही तो स्वर्ग है अर्थात् जब आप अपने कुकृत्य की गलती का अहसास करते हुए तथा आत्मग्लानि की अग्नि में जलते हुए क्षमा याचना करते हैं तब आप स्वर्ग में होते हैं। कहने का तात्पर्य है कि क्रोध का होना एवं न होना ही स्वर्ग–नरक को बनाता है। क्रोध करके हम अपने आप को नरक में पहुँचा देते हैं। क्रोध की अग्नि स्वयं के साथ–साथ दूसरों को भी जलाती है। इसके विपरीत क्रोध न करके हम अपने साथ दूसरों के लिए भी स्वर्ग का निर्माण कर देते हैं, जो कि आनन्ददायी है।

– सेवक प्रशान्त भैया

एक सेवाभावी मानव की जीवनी

(वरिष्ठ पत्रकार श्री सुरेश जी गोयल द्वारा लिखित–झीनी–झीनी रोशनी से)

कैलाश तो ऐसे अवसरों की तलाश में ही रहता था। एक शनिवार को वह बलवन्त सिंह मेहता के घर आयोजित सत्संग में भी पहुँच गया। वहां जब उसकी भेंट डॉ. दौलत सिंह कोठारी, जस्टिस राणावत और कर्नल बख्तावर सिंह जैसे मेवाड़ का नाम पूरे देश में रोशन करने वाली हस्तियों से हुई तो वह धन्य हो गया। इन सबके बारे में बहुत पढ़ सुन रखा था, जब इनके साक्षात् दर्शन हुए तो वह सबके चरणों में गिर पड़ा। जब कैलाश के सेवा कार्यों के बारे में इन सब विभूतियों को बताया गया तो ये सब भी प्रसन्न हुए।

कैलाश को इन लोगों की बातें सुनकर कुछ न कुछ सीखने को ही मिलता। अब वह हर शनिवार इस सत्संग में भाग लेने लगा। सेन्ट्रल जेल में भी डॉ. आर. के. अग्रवाल सत्संग कराने लगे। वे सब कैदियों को कतार से बिठा देते और सबसे सामूहिक रूप से कीर्तन करवाते। कीर्तन के पश्चात् डॉ. अग्रवाल कैदयों को अत्यन्त सरल भाषा में उपदेश भी देते। कैलाश भी जब कभी इस दौरान वहां उपस्थित होता तो डॉ. अग्रवाल कैलाश को भी अपनी बात रखने का अवसर प्रदान करते। इसका परिणाम यह निकला कि धीरे–धीरे कैलाश का बोलने का भी अच्छा अभ्यास हो गया। वह कैदियों से उनके अनुभव और उनकी अनुभूतियां भी जानने लगा।

इन तीन चार गतिविधियों के अनायास जुड़ जाने से कैलाश की व्यस्तताएं बढ़ने लगी, इसके बावजूद बीसलपुर जाने के उसके सिलसिले में व्यवधान उत्पन्न नहीं हुआ। एक बार राजमल जी भाईसा ने मुम्बई से मफतकाका द्वारा भेजे गए कपड़ों में से दो बोरे कपड़े उसे दिये और कहा कि उदयपुर में बांट देना। सभी कपड़े विदेशी थे जो मफतकाका को विदेश से मिलने वाली राहत सामग्री का हिस्सा थे।

अंश - 97

राजस्थान में पानी की कमी के कारण अनेक रोग फैलते रहते हैं, जिनमें से पीलिया रोग एक घातक और दुःखदायी रोग है। गर्मी एवं पानी की अत्यधिक कमी इस रोग को उत्पन्न करने में सहायक है। पीलिया से बचाव और उपचार अत्यंत आवश्यक है।

कारण– इस रोग के अनेक कारण हैं। मिर्च मसालेदार पदार्थो का सेवन करना, धूप में अधिक घूमना, बेसन की व तेल से बनी चीजों का सेवन करना, सड़े–गले फलों का सेवन करना, अधिक गरिष्ठ और घी, तेल के स्निग्ध पदार्थो का उपयोग करना एवं दूषित(बिना शुष्क किये) पानी पीना, आदि कारणों से य.त दुर्बल हो जाता हैऔर य.त (लीवर) में पित्तरस का निर्माण सही रूप में न होने पर पीलिया रोग उत्पन्न होता है। वास्तव में इस रोग का उत्पादक कारण य.त या लिवर की वि.ति होना है।

लक्षण : रोगी का शरीर पहिले उष्ण होता है, बुखार अनुभव होता है और धीरे–धीरे उष्णता या बुखार बढ़ जाता है। इसके बाद आंखें पीली दिखाई देती है, हाथ–पैरों के नख पीले पड़ जाते हैं, रोगी के मुख में पीलापन आ जाता है।

पेट में विशेषकर दांयी तरफ य.त की ओर तेज दर्द होता है, खाने–पीने की इच्छा नहीं होती, भूख कम हो जाती है, पेशाब में कभी जलन भी होती है। आंखों में जलन और पानी का स्राव होता है, बेचैनी बढ़ जाती है, कमजोरी बढ़ जाती है, शरीर में दर्द होता है और रोग बढ़ने के साथ दिनों दिन कमजोरी बढ़ती जाती है।

सामान्य उपचार : रोग होने पर रोगी को पूर्ण विश्राम करना चाहिए। आहार में तरल पदार्थ लेवें मौसमी का रस, गन्ने का रस पिलावें। नीम्बू की शिकंजी पिलावें, शुद्ध पानी थोड़ा–थोड़ा, बार–बार पिलावें। हल्का और पाचक भोजन लेना चाहिए ताकि लीवर और आंतों पर अधिक वजन नहीं पड़े।

(यह जानकारी विविध स्रोतों से प्राप्त है कृपया चिकित्सक से सलाह अवश्य लें।)

कितने जादू के शो हो रहे है? हाँ, जिनकी माता जी तारा जी कुमावत, अद्भूत घटनाएं। कालीवास में नशामुक्ति के लिए भगवान ने कुछ बुलवाया। डॉक्टर आर.के. अग्रवाल साहब भी बोले– नशा, नाश का द्वार है। कालीवास तो जब शाम को आये तो कितने दुर्गम क्षेत्र में भगवान ने पहुँचादिया। पगडंडियाँ, पहाड़ हाँ, कुछ लोगों की बस्ती। दूर–दूर से आये। बूझड़ा, 29–12–1985 को बूझड़ा ग्राम, शिवनारायण जी, आदरणीय श्री शिवनारायण जी वैद्य, ओ.पी. महात्मा जी डॉक्टर साहब, आदरणीय शांतिलाल जी नलवाया जी अब शांतिलाल जी नलवाया जी हमें अन्तरिक्ष से हमें आशीर्वाद दे रहे हैं। बूझड़ा गांव में पहुंचे, वहाँ छाछ केन्द्र प्रारम्भ किया था। जो आदरणीय दिवाली बेन मोहनलाल मेहता चेरिटेबल ट्रस्ट, जो अभी ट्रस्ट है। जो दूध का पाऊडर मिलता था। उदयपुर से बर्तन खरीदे। पीतल में तो छाछ खराब हो जाती है। इसलिये एल्यूमिनियम में भी कोई द्रव्य पदार्थ लम्बे समय तक नहीं रखना चाहिये।उस समय तो एल्यूमिनियम ही प्रचलित था। एल्यूमिनियम के बड़े–बड़े वो घड़े खरीदे, वो डेगचियाँ। बांस का यहाँ उदयपुर के धानमण्डी क्षेत्र में पांच–सात बांस वाले बैठते हैं। मन्दिर है, मन्दिर के पीछे वहाँ साईकिल लेकर कैलाश जी। कैलाश, कैलाश बड़ा भाग्यवान है– भैया। बहुत अच्छा। तो बाँस का एक बनवाया वो छाछ बिलोने की बिलोवणी, बोलते है बिलोवणी।

सेवा ईश्वरीय उपहार– 224 (कैलाश 'मानव')

अपने बैंक खाते से संस्थान के बैंक खाते में जमा करें - अपना दान

आप अपना दान सहयोग नारायण सेवा संस्थान, उदयपुर के नाम से संस्थान के बैंक खातों में सीधे भी जमा करवाकर PAY IN SLIP भेजकर सूचित कर सकते हैं, जिससे दान प्राप्ति रसीद आपको भेजी जा सके।

संस्थान पैन कार्ड नम्बर AAATN4183F, टैन नम्बर JDHN01027F

Bank Name	Branch Address	RTGS/NEFT Code	Account
State Bank of India	H.M.Sector-4	SBIN0011406	31505501196
ICICI Bank	Madhuban	ICIC0000045	004501000829
Punjab National Bank	KalajiGoraji	PUNB0297300	2973000100029801
Union Bank of India	Udaipur Main	UBIN0531014	310102050000148

संस्थान को दिया गया दान-सहयोग आयकर अधिनियम 1961 की धारा 80G के अन्तर्गत 50 प्रतिशत नियमानुसार छूट के योग्य है।